

THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

हिन्दी असाइनमेंट

“वैश्विक तापमान”

Submitted To:

Dr. Swadesh Rathod
Assistant Professor
of Hindi

Submitted by:

Sarika. S
CZMB [2nd year]
Reg no: 19RNS85201

सूची

No.	विषय	पृष्ठ सं:
1.	प्रलोकल वार्मिंग का इतिहास	2
2.	भूमिका	3
3.	परिभाषा	4 - 5
4.	कारण	6 - 8
5.	दुष्प्रभाव	9
6.	रोकने का उपाय	10
7.	निष्कर्ष	11

हिमाल वर्षीय का इतिहास

19 वीं शताब्दी के अंत में, पट्टिका गपा
कि आने वाले वर्षों में पूर्वी का तापमान
लड़ सकता हुआ और इसका कारण वातावरण
में कार्बन डिसर्जन की लट्टी मात्रा होगी।
इलाकों के, इसके बारे में कई पुस्तक सबूत
नहीं था। पट्टिका गपा 1938 में या कि
सिंधुने पिछले 50 वर्षों में एकत्र हुए
गए कुल दौरा समर्पित था। इस दौरा
में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है कि इन वर्षों
के दौरान घमारे गए का तापमान लड़
गया था। विषय के बारे में जिकासा
वर्दी और कई वैज्ञानिक और शोधकार्य
इसके अध्ययन में शामिल हो गए।

1970 और 1980 के दशक के दौरान
तापमान में वृद्धि होनी रही और
हिमाल वर्षीय शोध को उसी
समय के अस्पत्त में गढ़ा गया। लक
से, पूर्वी का तापमान लड़ रहा है।



गलोबल - वार्मिंग

भूमिका :

गलोबल वार्मिंग पृथकी की अवधि (जमीन और पानी दोनों) के तापमान के साथ-साथ वायुमंडल में वर्तमान वृद्धि है। पिछले 100 वर्षों में दुनिया भर में औसत तापमान 0.75 डिग्री सेलिसियस (1.4 डिग्री फारेनहाइट) बढ़ रहा है, इस वृद्धि का दो त्रिशति 1975 के बाद से दुआ है। बहुत पहले, जब पृथकी के तापमान में वृद्धि हुई थी तब यह प्राकृतिक कारणों का परिणाम था लेकिन आज यह मानव गतिविधियों द्वारा उत्पादित वातावरण में एक ग्रीनहाउस गैसों के संचय के कारण हो रहा है।

पिछले 50 वर्षों में, इकोर्स किसी राज इनियास में सबसे तेज़ रूप से आंशिक वैश्विक तापमान बढ़ा रहा है, और विशेषज्ञों का मानना है कि यह प्रबृहि तेज़ी से बढ़ रही है।

प्लानेट - वार्मिंग किसे कहते हैं?

जीसा कि नाम से ही स्पष्ट है, धरती के बातावरण के तापमान में लगातार हो रही विश्वव्यापी बढ़ातरी को प्लानेट वार्मिंग कहा जा रहा है। इमारी धरती शूरु की किरणों से उम्मा प्राप्त करती है। ये किरणें वायुमंडल से गुज़रती हुई धरती की सतह से उकाती हैं और फिर वही से परावर्तित दौलत पुनः लौट जाती है। धरती का वायुमंडल कई ग्रैसों से मिलकर जना है जिनमें कुछ प्रीनेट्रेशन ग्रैस भी शामिल है। इनमें से अधिकांश धरती के ऊपर एक प्रकार से एक प्राकृतिक आवरण बना लेती है जो लग्ती किरणों के एक विषय को रोक लेता है और इस प्रकार धरती के बातावरण को गर्म बनाए रखता है। ग्रैसेनांक है कि मानवों, प्राणियों और पौधों के जीवित रहने के लिए कम से कम 16 डिग्री सेलिंशूरेस तापमान आवश्यक होता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रीनेट्रेशन ग्रैसों में बढ़ातरी दोनों पर यह आवरण और भी सघन पा खाटा होता जाता है। ऐसे में यह आवरण शूरु की अधिक किरणों को रोकने लगता है और ये भी इसे बुझ हो जाते हैं। प्लानेट वार्मिंग के हुए प्रभाव ।

आईपीसीसी के द्वारा बिंदु ग्रो अल्वायु परिवर्तन के मॉडल इंगित करते हैं कि धरातल का औसत प्लानेट तापमान 21 वीं शताब्दी के द्वितीय और अधिक लहरें सकता है। सारे अंतर्राष्ट्रीय के तापमान में दोनों वाली इस बुद्धि से अनुद्र के रूप में बुद्धि, चरम भौजम में बुद्धि न्या वर्षों की मात्रा और रचना

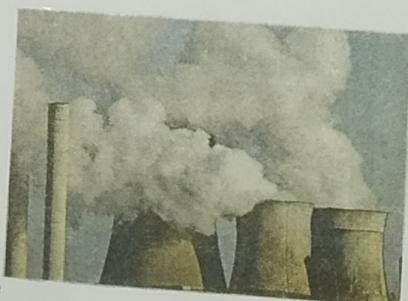


में महत्वपूर्ण निदलाव आ सकता है। ग्लोबल वार्मिंग के अन्य प्रभावों में कृषि उपज में परिवर्तन, घोपार मार्गों में संशोधन, ग्लोबल गर्मी का पीछे दौला, प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा आदि शामिल हैं।

वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसें

ग्रीनहाउस प्रभाव की खोज 1824 में जॉनेक फारियार द्वारा की गई थी तथा 1896 में पहली बार स्कॉटी आर्डेनेस द्वारा इसकी मात्रात्मक जांच की गई थी। यह प्रक्रिया द्वारा जो अवशोषण और उत्सर्जन के अवलोकन विकिरण द्वारा वातावरण में ग्रीन गैसों वातावरण में एक और ग्रेड की सतह कम है।

वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड में दाल ही में दोनों गाली बहोतरी (CO_2) माध्यमके CO_2 मापन पर दर्शाते हैं कि आगे आये वर्ष को छोड़ा जाए तो छोटे-छोटे मासमी परिवर्तन होने को अनुलेख है, हर साल पर यह परिवर्तन उत्तरी गोलार्ध में वसत मासम के आधिक में अधिक हो जाते हैं और जल उत्तरी गोलार्ध में ऊसले बीजने जा समय होता है तो यह परिवर्तन ज्ञात हो जाते हैं क्योंकि पाँच वातावरण में से कुछ CO_2 दूर होते हैं।



प्रलोकन - वार्मिंग के कारण

6

1. जीवाश्म इंधन का दृष्टिपोर्ट :

जीवाश्म इंधन का पूर्वी की धरांडर मात्रा जाता है। पूर्वी की उपर्युक्त - पश्चात में जो श्री जीव, पेड़ - पौधे आदि जब पूर्वी के गम्भीर में समा जाते हैं तो करोड़ों वर्ष बाद यह जीवाश्म इंधन में परिवर्तित हो जाते हैं। इसके बाद यह पूर्वी में संचित रूप, तेल आदि कौपले के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। लैटिन लंबे समय तक इसके प्रयोग से वातावरण पर बुरा असर पड़ता है, क्योंकि इनके जलाने से कार्बन हाइऑक्साइड रूप से विकलती है। इस रूप के वातावरण में मिल जाने से हीन हाउस में इस रूप की मात्री लेपर बनती है जो मानव वार्मिंग का कारण बन जाती है।



2. पेटों की कटाई:

अनसंख्या विकार, अद्याग्रीकरण आदि आधुनिक परिवन शैली ने पेटों की कटाई के काम को भुवरेन्टर पर ला कर छड़ा कर दिया है। इस कारण इवा में छुली कार्बन हाई ऑक्साइट जो पहले पेटों को खाए गए थे, अब वातावरण में ही रह जाती है। इसके अतिरिक्त बड़ी मात्रा में पेटों की कटाई

दोने से भूमि की उर्वर सतह का क्षयण भी हो जाता है जिससे भूमि की उर्वरता खत्म हो जाती है। भूमि का क्षयण भी नहीं से होता है जिसके कारण भू-स्थलव और पड़ाड़ों का गिरना अब एक आम बात हो गई है। इन अलग उल्लेख वार्मिंग में प्रोग्राम मात्रा जाता है।



3. पातापात प्रदूषण :

जनसंख्या विकास ने पर्यावरण के साधनों से वृद्धि करके इन सभी साधनों से विकले घुएं से प्रदूषण में नहीं से वृद्धि की है। इन साधनों में इंटरग्राम दोने बाला पेट्रोल और डीजल भारी मात्रा में वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइट छोड़ता है। इस प्रकार अब पह माना जाता है कि उल्लेख वार्मिंग में बहुत बड़ा ही पातापात के साधनों से विकले वाले घुएं के प्रदूषण का है।



4. आधुनिक फॉलोअप्ट्रॉनिक उपकरण :

वर्तमान समय में लगभग हर घर में एसी, बीनटी
और इसी तरह के सुविधा हेने वाले उपकरण
प्रयोग किए जा रहे हैं। लेकिन हर उपकरण
से निकालने वाला इधन का प्रदूषण आसपास
की ओर को बढ़ावा देता है और इसीलिए कई निकाल
वार्मिंग में बढ़ावा कर रहा है।



5. आद्याग्रिक कानिं:

किसी भी देश का विकास उसके आद्याग्रिक
विकास पर निर्भए करता है। लेकिन पहली
आद्याग्रिक विकास चलाने वार्मिंग को नहीं
से बढ़ाने में भी महत्व कर रहा है। कैविद्यपा,
और कारखाने से निकालने वाले धुएं में
विनाशकारी गैसें होती हैं जो न केवल वातावरण
को प्रदूषित करती हैं बल्कि मानव स्वास्थ्य
पर भी बुरा प्रभाव डालती है।



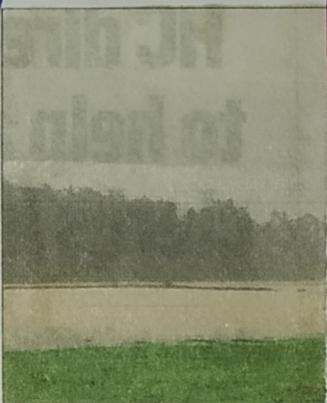
६. राजपानिक तर्बरक :

कृषि क्रान्ति के परिणामस्वरूप फसल में वृद्धि करने के लिए राजपानिक तर्बरकों का तजी से प्रयोग किया जा रहा है। इनका सीधा प्रभाव वातावरण में नाइट्रोजन ऑक्साइट में दोनों गाली वृद्धि के स्पष्ट में दिखाई देता है। यह गैस कार्बन डाइ ऑक्साइट से भी अधिक घतनाकृति है और ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार मानी जा सकती है।

ग्लोबल वार्मिंग के कुछ प्रभाव :

ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथकी के विभिन्न इलाजों में जो कुछ प्रभाव दिखाई देते हैं वे हैं :

१. देशों के मूल और बास्तविक तापमान में अंतरक विपरीत परिवर्तन देना,
२. ग्लोबल वार्मिंग का अंतरक बड़ी मात्रा में परिवर्तन,
३. सामुद्री जल में तेजी से वृद्धि देना,
४. नावें और सूखे पर्यावरण के आपदाओं का नोट-नोट आना,
५. झु-झुलन, झुक्केप, उचालामुखी पर्यावरणीय त्रिपथि का नोट-नोट उपलब्ध देना।
६. ऐग्रीकल्चरी रोलों का बढ़ना।



प्लॉबल वार्मिंग का सबसे बड़ा दृष्टिभ्रान्ति, वातावरण में गैसों का स्तर बढ़ने से एक महीने आई सर्वन परत बनने के रूप में भी फ़िखाई देता है। इसमें शूर्प का प्रकाश और निरुप धूती तक नहीं पहुँच पाती है। २। वी वितान्दी के सबसे बड़े खतरे के रूप में फ़ैले जाने वाली प्लॉबल वार्मिंग की समस्या ऐसी एक क्षेत्र की नहीं जिसके सम्बन्ध में विश्व की है।

प्लॉबल वार्मिंग के रोकने के उपायः

मानव पर्ही याहे तो क्या नहीं कर सकता है। इसी प्रकार निम्न उपायों के अपनाकर प्लॉबल वार्मिंग ऐसी समस्या का भी इल निकाला जा सकता हैः

1. वायु प्रदूषण के बढ़ने वाली सभी गैसों की निकाली के रोकने का प्रयास करना होगा। इसमें सबसे बड़ा गौगादान परिवर्तन के लिए प्रक्रियिक अर्जी का इन्हेमाल किया जा सकता है, प्रदूषण और डीजल के उचान पर ही-अर्जी का प्रयोग इसमें सबसे अधिक लाभकारी निष्ठा दे सकता है।
2. पारंपरिक अर्जी के स्रोत के उचान पर नहा और प्रक्रियिक स्रोत ढेढ़ने चाहिए। इसके लिए वायु अर्जी (पवन चक्री), और अर्जी आदि का उपयोग किया जा सकता है।
3. जितना दे सके उतना भी-साइक्लिंग, पर जो भी दिया जाए, क्रिक्केट इव निकलने वाले पारी को शुद्ध करके पुनः प्रयोग किया जा सकता है,

निष्कर्ष

विभिन्न मानवीय गतिविधियों के द्वारा
उत्पन्न होने वाली इलाजल वर्गिंग
की समस्या के कारण हमारे हड्डे
का नापमान बढ़ता जा रहा है और
इस समस्या का कारण तो हम
पता चल ही चुका है। अब
हम और समाज नहीं पर्याप्त जटा
चाहिए और इस विषय को लोकों
भावकों अपापे को अपनाते हुए,
हमें समाधान के लिए हम
आप अलोक भ्राता करना होगा।